कविताएं: अनवर सुहैल

मज़दूर दिवस: काश ऐसा न होता

रात अंधड़ में
छितराए फूस के छप्पर को
करना है दुरस्त
लेकिन समय कहाँ
अभी तो जाना है काम पर

फिरसे फूल आये पेट में
कुलबुला रहा है जीव
अनमनी सी कराह रही घरवाली
रांध नही पाती भात...

भूखे पेट पैडल मारता भूरा
टुटही साइकिल खींच रहा
ससुरी चैन साईकिल की
काहे उतरती बार-बार
भूरा बेबस-लाचार,
ठीकेदार का मुंशी भगा देगा उसे
जो देर से पहुंचा वो...

लड़ भी तो नही सकता
भगा दिया गया तो
डूब जायेगी तीन माह की मजूरी

भूरा नही जानता
कि आज मजदूर दिवस है
आज तमाम मजदूर-विरोधी प्रतिष्ठानों में
मजदूरों के योगदान और बलिदान पर
बोलेंगे अभिजात्य मजदूर नेता
और शोषक धन्नासेठ मालिक...

कैसे समझाएं...

कैसे समझाएं तुम्हें
कि हम कोई
झुण्ड नही मवेशियों के

कैसे यकीन दिलाएं तुम्हें
कि हमारे भी कई ख़्वाब हैं
छोटी-छोटी, इत्ती-उत्ती ख़्वाहिशें हैं
जिनसे हम भूले रहते हैं
अपने दुःख, अपनी चिंताएं...

तुम हमारे जीवन में
आते हो एक दखल की तरह
और छितरा-बिखरादेते हो
हमारे रेत के घरौंदे....

हमारे बीच से
पा लिए तुमने बिचैलिए
और बन बैठे बलात

चरवाहा, मार्ग-दर्शक, उद्धारक...

जाओ, हम तुम्हे अब पहचान गए हैं
और अपनी ताकत को जान गए हैं...

<u>भ्रम न पालो लोगों...</u>

यह सोच कर खुश न हों
कि हमें बहुत सताया तुमने
हमे कोई नही सता सकता
हम तो सदियों के सताए हैं...

हम तो खटारा बस के सफ़र में
तलाश लेते हैं एक संगीत
हम रेल के जनरल कोच में
तलाश लेते हैं मीत..

खुद पर नाज़ है हमें
असुविधाओं, अभावों में पले हैं हम
तभी तो फौलाद से ढले हैं हम

विपरीत धारा में तैरने का मज़ा
तुम क्या जानो दोस्त...

सवाल उठते रहेंगे...

सवाल उठते ही रहेंगे
हम जाविये बदल कर
नये तर्कों से सजाकर
देते रहते हैं जवाब
जवाब कितने भी सटीक हों
लेकिन वे
मुतमईन हो नही होते...

संदेह के जंगल में
सवालों के दरख़्त
फिर-फिर उग आते हैं
और हम बार-बार
उन्ही जवाबों को

दुहराते थक जाते हैं....

अब बस भी करो भाई
या तो सवाल बदल दो
या फिर हमें बख्श दो....

चाहत

ये नफ़रतें...
ये ज़ुल्मतें...
ये लानतें-मलामतें...
ये तुहमतें...
इंसान इसी पूँजी के बल पर
बिसात बिछाकर
शिखर-पुरुष बन बैठता है....

और ऐसे कठिन समय में
हम कितने बुरबक हैं जी
जो खोज रहे हैं
मुहब्बतें..मुहब्बतें...मुहब्बतें....

अग्नि-परीक्षा

कहते हैं कि एक दाना से
पता चल जाता है
कि हंडिया में भात तैयार हुआ या नही

लेकिन तुमने
एक-एक कर
चेक किये हंडिया सारे दाने
फिर भी आश्वस्त नही हमसे....

आजमाइश की
कोई और तरकीब सोचो दोस्त
शक का कोई इलाज नही
हम नही हैं हंडिया के दाने
और कच्चे भी नही हैं हंडिया में
हम पके हुए हैं पूरे
जितना कि तुम हो दोस्त.....